

एवोगैड्रो संख्या का निर्धारण

एवोगैड्रो संख्या का मतलब होता है किसी भी पदार्थ के एक मोल में उपस्थित कणों की संख्या। और यह संख्या काफी विशाल है 6.02×10^{23} । यहां जिन कणों की बात हो रही है वे अत्यंत सूक्ष्म हैं। इन्हें सीधे-सीधे गिन पाना संभव नहीं है, इसलिए इनकी गिनती अप्रत्यक्ष रूप से ही संभव है।

लेख के इस दूसरे भाग में फ्रांसीसी वैज्ञानिक ज़्यां पेरिन द्वारा बीसवीं शताब्दी के शुरू में खोजी गई विधि दी जा रही है जिससे न केवल एवोगैड्रो संख्या का पता चला, बल्कि पदार्थ की कण प्रकृति की पुष्टि भी हुई।



पंजाब साइंस इंस्टीट्यूट

19वीं सदी में भारत में सामाजिक, आर्थिक व साहित्यिक क्षेत्रों में बहुत कुछ नया हो रहा था। साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में भी खामोशी नहीं थी। एक ओर भारतीय वैज्ञानिक शोधकार्यों में जुटे हुए थे, वहीं दूसरी ओर कुछ लोग आम जनता के बीच विज्ञान को लोकप्रिय बनाने, विज्ञान में ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को जोड़ने के लिए प्रयासरत थे। रुचिराम साहनी भी जनरुचि के विज्ञान विषयों पर व्याख्यान मालाएं और प्रयोग दिखाकर अपने तरीके से लोगों को विज्ञान की ओर आकर्षित कर रहे थे। उनकी व्याख्यान मालाएं शिमला, लाहौर, रावलपिंडी की शहरी जनता के साथ-साथ ग्रामीण लोगों में भी लोकप्रिय थीं। कुछ रोचक प्रसंग इस पुस्तक-अंश में हैं।

शैक्षणिक संदर्भ

अंक: 57 जनवरी-अप्रैल 2007

इस अंक में

- 7 | गलत जवाब पर शाबाशी
मार्क पायन्
- 12 | डाक टिकट की गुत्थी
मार्टिन गार्डनर
- 13 | एवोगैड्रो संख्या का निर्धारण
सुशील जोशी
- 21 | स्थानीय मान और जोड़ सिखाने का प्रयास
कॉन्स्टेंस कामी एवं लिंडा जोसेफ
- 31 | ईट भी पानी पीती है
दिलीप चुघ
- 35 | चींटियों की अनोखी दुनिया
अरविंद गुप्ते
- 39 | पंजाब साइंस इंस्टीट्यूट
रुचिराम साहनी
- 51 | सबसे तेज़ प्रकाश, तो उसके बाद कौन ?
प्रियदर्शिनी कर्वे एवं राजश्री राजगोपाल
- 57 | अम्ल-क्षार, हल्दी कागज़ और कुछ बातचीत
प्रमोद मैथिल
- 69 | दादी ने की बुनाई
तेजी ग़ोवर
- 75 | फर्स्ट, सेकेंड या थर्ड
दिशा अरविंद मधु
- 81 | घीसा
महादेवी वर्मा
- 93 | बीज का तीसरा छिलका
किशोर पंवार